जय विराग

ॐ संकट मोचन तारण हारे, गुरु विमर्श की जय जय जय ॐ

जय विमर्श

''जिनागम पंथ जयवंत हो''

''जीवन है पानी की बूँद'' महाकाव्य के मूल शब्द शिल्पी, ''विमर्श लिपि'' के सृजेता

''अहार जी के छोटे बाबा'' आदर्श महाकवि, राष्ट्रयोगी

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

के मंगल सान्निध्य में

भारत की राजधानी दिल्ली मेंप्रथम बार पर्यूषण पर्व की पावन बेला पर

उपासक संस्कार शिविर

दिनांक 8 सितम्बर से 17 सितम्बर 2024

स्थान : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कृष्णानगर, दिल्ली

शिवरार्थियों के शिविर संबंधी आवश्यक नियम

- दस दिनों तक गृह का पूर्णत: त्याग रहेगा।
- अपने पास पैसा, मोबाइल, अंगूठी, चैन, घड़ी आदि का त्याग रहेगा।
- धोती दुपट्टा, पेन, पुस्तक, डायरी, स्वाध्याय हेतु ग्रंथ के अलावा अन्य कोई भी सामग्री नहीं रखी जायेगी।
- बाहर से आगंतुक शिविरार्थियों को पैसा आदि कीमती सामान व अन्य सामग्री व्यवस्थापक समिति के कार्यालय में जमा करानी होगी।
- पुरुषों के लिए 10 दिनों तक धोती दुपट्टा में रहना होगा।
- महिलाओं के लिये केशरिया साड़ी में रहना अनिवार्य होगा।
- भोजन एक समय करना होगा, अंतराय आदि आने पर, अथवा असमर्थता होने पर शाम को दूध पानी अथवा अल्पाहार ले सकते हैं।
- रात्रि में 8.30 बजे से प्रात: 4.30 बजे तक मौन रखना होगा।
- ओढ़ने का चादर साथ लेकर आवें।
- शिविर के दौरान 10 दिनों तक के लिये रात्रि में समस्त प्रकार की खाद्य सामग्री एवं पेय (पानी, दूध आदि) का त्याग रहेगा।
- कुछ नियम समयानुसार पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राप्त होंगे, जिनका पालन अनिवार्य रूप से करना होगा।
- वस्त्र आदि धोने के लिये अथवा स्नान करने के लिये किसी भी प्रकार के साबुन, सर्फ आदि का उपयोग नहीं किया जायेगा।
- महिलायें भी शिविर में भाग ले सकती हैं, पर उनको सोने, नहाने की व्यवस्था अपने गृह पर ही करनी होगी।
- शिविर के दौरान दस दिनों तक पुरुष वर्ग, स्त्रियों से एवं स्त्री वर्ग पुरुषों से किसी भी प्रकार का लेन–देन या बातचीत रूप व्यवहार नहीं रखेंगे। अगर अनिवार्य हो तो गुरु आज्ञा पूर्वक ही करना होगा।
- शिविर के उपरोक्त नियमों का पालन करना अनिवार्य है, नियमों का उल्लंघन होने पर पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त प्राश्चयित्त करना होगा।

✓ मैं (अपना नाम)..... शिविर के समस्त नियम एवं मर्यादाओं का पूर्ण आस्था के साथ , मन, वच, काय से पालन करूँगा/करूँगी।

✓ सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की साक्षी में उपरोक्त नियमों का यथाशक्ति पालन करने की प्रतिज्ञा लेता हूँ/लेती हूँ।

पंजीयन क्रमांक :..... दिनांक :.....

शिविरार्थी का नाम :..... आयु :.....

पिता/पति का नाम :..... फोन नं :.....

पता :..... मोबाईल :.....

.....

..... सम्बन्धित प्रतिनिधी हस्ताक्षर

शिविरार्थियों की दैनिक चर्या

प्रात:	04:00 बजे	–	निद्रा विसर्जन, 9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।
	04:05–04:15 बजे	–	प्रार्थना (सुप्रभात स्त्रोत)
	04:15–05:00 बजे	–	नित्य क्रियायें (शौच, स्नान आदि)
	05:15–06:15 बजे	–	ध्यान (गुरुदेव द्वारा)
	06:15–08:15 बजे	–	देवदर्शन, जिनाभिषेक, शान्तिधारा, पूजन
	08:30–08:50 बजे	–	तत्त्वार्थ सूत्र के दस अध्यायों का वाचन
	08:50–09:05 बजे	–	गुरू पूजन
	09:05–10:00 बजे	–	परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी गुरुदेव की दस धर्म पर अमृत देशना
	10:15 बजे	–	आहार चर्या
दोपहर :	11:00–12:00 बजे	–	ईर्यापथ प्रतिक्रमण (पूज्य गुरुदेव के पास)
	12:00–01:00 बजे	–	माध्याह्निक देव वंदना (सामायिक)
	01:00–02:00 बजे	–	मौन साधना, निजी स्वाध्याय
	02:00–03:00 बजे	–	जिनागम पंथ प्रशिक्षण
	03:00–04:00 बजे	–	पूज्य आचार्य श्री द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र के एक अध्याय पर प्रतिदिन प्रवचन
	04:15–05:15 बजे	–	स्वल्पाहार
शाम:	06:30–07:00 बजे	–	दैवसिक प्रतिक्रमण
	07:00–07:30 बजे	–	आचार्य वंदना, आरती
	07:30–08:30 बजे	–	सामायिक
	08:30–04:00 बजे	–	रात्रि विश्राम (रात्रि में मौन रहेगा)